SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 4 | April 2026

हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा: पिंगल शास्त्र के आलोक में एक सांस्कृतिक विश्लेषण (रागणी 8–16 के संदर्भ में)

आनन्द कुमार आशोधिया
स्वतंत्र शोधकर्ता एवं पूर्व वारंट ऑफिसर, भारतीय वायु सेना

सार

यह शोध-पत्र हरियाणवी लोक-साहित्य की प्रमुख विधा 'रागणी' के माध्यम से हीर–राँझा कथा के मध्य एवं उत्तरार्ध (रागणी 8–16) का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि प्रेम, विरह, सामाजिक नियंत्रण तथा आध्यात्मिक रूपांतरण जैसी अवधारणाएँ रागणी परंपरा में किस प्रकार अभिव्यक्त होती हैं। यह शोध गुणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें पाठ-विश्लेषण के साथ पिंगल शास्त्र के छंद-विधान विशेषतः मात्रा-संतुलन, यति और तुकांत योजना का उपयोग किया गया है। साथ ही सांस्कृतिक अध्ययन और लोक-आख्यान के सैद्धांतिक दृष्टिकोणों के माध्यम से रचनाओं के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अर्थों की व्याख्या की गई है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रागणी 8–16 कथा के एक महत्वपूर्ण संक्रमण चरण का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ प्रेम रोमांटिक आकर्षण से सामाजिक संघर्ष में परिवर्तित होकर अंततः विरह और वैराग्य की ओर अग्रसर होता है। हीर का जबरन विवाह, राँझा का विलाप और उसका जोगी रूप धारण करना व्यक्ति और समाज के बीच अंतर्विरोध को उजागर करते हैं। इस प्रक्रिया में पितृसत्तात्मक संरचना के अंतर्गत नारी की सीमित स्वतंत्रता भी स्पष्ट रूप से सामने आती है। यह शोध निष्कर्ष रूप में प्रतिपादित करता है कि हरियाणवी रागणी केवल मंचीय अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक आलोचना और मानवीय भावनाओं की गहन अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, जो क्षेत्रीय और सार्वभौमिक अनुभवों के बीच सेतु का कार्य करती है।

मुख्य शब्द: रागणी, हीर–राँझा, हरियाणवी लोक-साहित्य, पिंगल शास्त्र, विरह, सांस्कृतिक विश्लेषण

अध्ययन की पृष्ठभूमि एवं संदर्भ

यह शोध-पत्र हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी श्रृंखला के क्रमिक अध्ययन का अगला चरण है। इस श्रृंखला के पूर्ववर्ती खंड (रागणी 1–7) का विश्लेषण पूर्व प्रकाशित शोध में किया जा चुका है (आशोधिया, 2026), जिसमें कथा के प्रारंभिक विकास, प्रेम की स्थापना तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान अध्ययन उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए रागणी 8–16 के माध्यम से कथा के मध्य एवं उत्तरार्ध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

भारतीय लोक-साहित्य में हीर–राँझा की कथा एक शाश्वत प्रेम आख्यान के रूप में प्रतिष्ठित है, जो समय और स्थान की सीमाओं को पार करते हुए विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक रूपों में अभिव्यक्त होती रही है। हरियाणवी लोक-संस्कृति में यह कथा 'रागणी' के माध्यम से विशिष्ट रूप ग्रहण करती है। रागणी केवल एक काव्यात्मक संरचना नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, जिसमें संगीत, प्रदर्शन, भाषा और सामाजिक अनुभव का

*Corresponding Author Email: ashodhiya68@gmail.com
Published: 16 April 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i4.45689
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

समन्वय मिलता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य रागणी 8 से 16 तक के माध्यम से हीर–राँझा कथा के उस चरण का विश्लेषण करना है जहाँ प्रेम सामाजिक संघर्ष में परिवर्तित होता है और अंततः विरह एवं आध्यात्मिक रूपांतरण का स्वरूप ग्रहण करता है। यह चरण कथा का निर्णायक बिंदु है, जहाँ व्यक्तिगत भावनाएँ सामाजिक संरचना से टकराती हैं।

साहित्य समीक्षा

भारतीय लोक-साहित्य पर हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि लोक-आख्यान मात्र मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक स्मृति और ऐतिहासिक अनुभवों के प्रतिनिधि होते हैं (शर्मा, 2000; द्विवेदी, 1998)। रामविलास शर्मा (2000) के अनुसार लोक-साहित्य सामाजिक यथार्थ, वर्गीय संरचनाओं और शक्ति-संबंधों का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है, जबकि हजारी प्रसाद द्विवेदी (1998) इसे सांस्कृतिक निरंतरता का सशक्त माध्यम मानते हैं, जो परंपरा और आधुनिकता के मध्य सेतु का कार्य करता है।

हरियाणवी लोक-साहित्य पर अपेक्षाकृत सीमित, किंतु महत्वपूर्ण कार्य उपलब्ध हैं। यादव (2015) ने इसे ग्रामीण जीवन, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रामाणिक दस्तावेज माना है, जिसमें क्षेत्रीय पहचान और सामुदायिक मूल्यों का स्पष्ट प्रतिबिंब मिलता है। इसी प्रकार, लोक-आख्यानों के तुलनात्मक अध्ययन में रामानुजन (1991) यह संकेत करते हैं कि भारतीय लोककथाएँ बहुस्तरीय अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया के अंतर्गत विकसित होती हैं, जहाँ एक ही कथा विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में नए अर्थ ग्रहण करती है।

पिंगल शास्त्र के संदर्भ में त्रिपाठी (2010) का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि छंद, मात्रा, यति और तुकांत योजना काव्य की ध्वन्यात्मक संरचना के मूल तत्व हैं, जो न केवल सौंदर्य-विधान को निर्धारित करते हैं, बल्कि भाव-अभिव्यक्ति को भी सशक्त बनाते हैं। यही सिद्धांत रागणी की छंदात्मक संरचना को समझने के लिए आधार प्रदान करते हैं (त्रिपाठी, 2010)।

आधुनिक सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्गत स्टुअर्ट हॉल (1997) का दृष्टिकोण विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो यह प्रतिपादित करता है कि सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ सत्ता-संबंधों, सामाजिक संरचनाओं और विचारधारात्मक प्रक्रियाओं का पुनरुत्पादन करती हैं। इसी क्रम में ज़ाइप्स (2012) लोककथाओं को सामाजिक विमर्श के रूप में देखते हैं, जो समय-समय पर बदलते सामाजिक मूल्यों और संघर्षों को अभिव्यक्त करती हैं। इस सैद्धांतिक पृष्ठभूमि में रागणी का अध्ययन इसे केवल काव्यात्मक विधा न मानकर एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श के रूप में स्थापित करता है।

शोध पद्धति

यह शोध गुणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें पाठ-विश्लेषण, छंद-विश्लेषण और सांस्कृतिक व्याख्या को समेकित रूप से अपनाया गया है। अध्ययन के प्राथमिक स्रोत रागणी 8–16 की मूल पंक्तियाँ हैं, जो *हीर राँझा रागणी संग्रह* (आशोधिया, 2025) में संकलित हैं। इनका विश्लेषण पाठीय संरचना, भावात्मक अभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक संकेतों के आधार पर किया गया है।

रागणी 8–16 का चयन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह खंड कथा के संक्रमण चरण का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ प्रेम का स्वरूप सामाजिक संघर्ष और आध्यात्मिक रूपांतरण की ओर अग्रसर होता है। इस चयन से कथा के विकासक्रम को एक संगठित और क्रमबद्ध रूप में समझना संभव होता है।

पिंगल शास्त्र के अंतर्गत छंद-विधान, मात्रा-संतुलन, यति और तुकांत संरचना का विश्लेषण किया गया है, जिससे रागणियों की काव्यात्मक संरचना को व्यवस्थित रूप से समझा जा सके। इसके अतिरिक्त, व्याख्यात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए प्रेम, विरह और आध्यात्मिकता जैसे भावों की गहन व्याख्या की गई है।

सांस्कृतिक अध्ययन की पद्धति के अंतर्गत सामाजिक संरचना, लैंगिक संबंध, पारिवारिक दबाव तथा सामुदायिक मूल्य-व्यवस्था जैसे तत्वों का विश्लेषण किया गया है। यह पद्धति इस बात को स्पष्ट करने में सहायक है कि रागणी किस प्रकार न केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि सामाजिक यथार्थ और शक्ति-संबंधों का भी प्रतिनिधित्व करती है।

कथात्मक एवं साहित्यिक विश्लेषण

रागणी 8 कथा के उस निर्णायक मोड़ को प्रस्तुत करती है, जहाँ हीर का प्रेम सामाजिक प्रतिष्ठा के विरुद्ध अपराध के रूप में देखा जाने लगता है। परिवार, विशेषतः चाचा कैदों, उसके विवाह का निर्णय सैदां खेड़ा के जमींदार से करते हैं, जो सामूहिक निर्णय प्रक्रिया में नारी की इच्छा की उपेक्षा को स्पष्ट करता है। इस प्रसंग में प्रेम 'इज्जत' के विरुद्ध स्थापित होता है, जिससे यह सामाजिक संरचना उजागर होती है जहाँ व्यक्तिगत भावनाओं की अपेक्षा सामूहिक प्रतिष्ठा को प्राथमिकता दी जाती है। "इज्जत की माटी कूटना" जैसे प्रतीक पारिवारिक आक्रोश और सामाजिक दबाव को तीव्रता से व्यक्त करते हैं तथा पितृसत्तात्मक नियंत्रण की मानसिकता को सामने लाते हैं।

रागणी 9 में हीर के जबरन विवाह के साथ राँझा की भावनात्मक टूटन चरम पर पहुँचती है। "अपणा हाथ फेरती जाइये, मेरी अर्थी और कफ़न पै" जैसी पंक्तियाँ प्रेम को मृत्यु के रूपक से जोड़ती हैं, जिससे विरह की तीव्रता और अस्तित्वगत संकट उभरता है। "अर्थी और कफ़न" जैसे प्रतीक केवल व्यक्तिगत पीड़ा नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की कठोरता को दर्शाते हैं जो प्रेम को अस्वीकार करती है। इस रचना में करुण रस की प्रधानता लोक-शैली की सादगी के साथ मिलकर अत्यंत प्रभावशाली बनती है।

रागणी 10 और 11 में राँझा के चरित्र का गहन आंतरिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। प्रेम की विफलता उसे आध्यात्मिक मार्ग की ओर मोड़ देती है—"छोड़कै डांगर ढोर तेरे इब गुरु के चरण पखारूँगा" जैसी पंक्तियाँ इस रूपांतरण को स्पष्ट करती हैं। यह परिवर्तन वैराग्य की ओर अग्रसर होते हुए भारतीय भक्ति परंपरा से भी जुड़ता है। रागणी 11 में उसकी मानसिक स्थिति द्वंद्वात्मक हो जाती है, जहाँ आत्मघातिक संकेत और "इस किवाड़ नै बंद कर दिए साँकळ ताळी" जैसे प्रतीक मृत्यु-बोध को व्यक्त करते हैं, जबकि गुरु की शरण में जाने की आकांक्षा आध्यात्मिक पुनर्जन्म का संकेत देती है।

रागणी 12 में हीर का दृष्टिकोण सामने आता है, जो नारी संवेदना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। बुआ बुल्ली के साथ संवाद में वह अपनी पीड़ा और विवशता को व्यक्त करती है- "तेरे भरोसे बुल्ली..." जैसी पंक्तियाँ उसकी असहाय स्थिति को उजागर करती हैं। स्वयं को "कर्म की हीणी" कहना स्त्री की सामाजिक स्थिति और उसकी सीमित स्वतंत्रता को रेखांकित करता है।

रागणी 13 और 14 में राँझा की आत्मग्लानि और अंतिम टूटन स्पष्ट होती है- "गई टूट प्रेम की माळा" जैसी अभिव्यक्तियाँ संबंध-विच्छेद की पीड़ा को तीव्र बनाती हैं। "कान पड़ा कै बाबा बणज्या, इब भीख मांग खाऊंगा" के माध्यम से वह सांसारिक संबंधों का परित्याग कर गुरु की शरण ग्रहण करने का निर्णय लेता है। यहाँ "ज़हरी नागण" और "गुरु शरण" जैसे प्रतीक क्रमशः भावनात्मक तीव्रता और आध्यात्मिक समाधान को व्यक्त करते हैं।

रागणी 15 में हीर की विरह-वेदना अत्यंत मार्मिक रूप में व्यक्त होती है। "बकरे की ज्यूँ कटती मैं" जैसी पंक्तियाँ

उसके शारीरिक एवं मानसिक शोषण को उजागर करती हैं, जिससे पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की असुरक्षा और पीड़ा स्पष्ट होती है। यह रचना करुण रस का चरम उदाहरण है और नारी पक्ष की गहन संवेदना को सामने लाती है।

रागणी 16 में राँझा का जोगी रूप प्रकट होता है, जिसे हीर की नणन्द सेहती पहचानती है। "उस काळे बाग़ का जोगी, वो तै लागै प्रेमरोगी" जैसी अभिव्यक्तियाँ उसके व्यक्तित्व के आध्यात्मिक रूपांतरण को दर्शाती हैं। यहाँ राँझा केवल प्रेमी नहीं, बल्कि एक साधक के रूप में उभरता है, जिससे कथा एक चक्राकार संरचना ग्रहण करती है, जहाँ प्रेम अंततः आध्यात्मिकता में रूपांतरित हो जाता है।

पिंगल एवं छंदात्मक विश्लेषण

रागणी 8–16 का पिंगल शास्त्र की दृष्टि से विश्लेषण यह प्रतिपादित करता है कि हरियाणवी रागणी परंपरा केवल भावात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित छंदात्मक संरचना पर आधारित काव्य-विधा है। इन रागणियों में मुख्यतः सममात्रिक छंद का प्रयोग मिलता है, जिसमें प्रति पंक्ति लगभग 16 मात्राओं का संतुलन विद्यमान रहता है। यह मात्रा-संतुलन न केवल काव्य की लयात्मकता को सुनिश्चित करता है, बल्कि श्रव्य सौंदर्य को भी सुदृढ़ बनाता है।

यति का स्थान प्रायः 8–8 मात्राओं के मध्य स्थापित होता है, जिससे पंक्ति दो संतुलित खंडों में विभाजित होकर एक स्वाभाविक लय उत्पन्न करती है। यह यति-स्थापन रागणी की मौखिक प्रस्तुति में विशेष सहायक होता है, क्योंकि इससे गायक को श्वास-नियंत्रण और भाव-अभिव्यक्ति में सहजता प्राप्त होती है।

तुकांत योजना की दृष्टि से इन रागणियों में अंत्यानुप्रास का प्रभावी प्रयोग मिलता है, जहाँ पंक्तियों के अंतिम शब्द ध्वन्यात्मक समानता स्थापित करते हैं। इसके अतिरिक्त, आंतरिक तुक और अनुप्रास का प्रयोग रचना को ध्वन्यात्मक रूप से समृद्ध बनाता है। उदाहरणस्वरूप, "अर्थी–कफ़न" या "माटी–कूटना" जैसे शब्द-युग्म न केवल अर्थ-गहनता प्रदान करते हैं, बल्कि ध्वनि-स्तर पर भी प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

रागणी 8–10 में छंद की संरचना अपेक्षाकृत संतुलित और नियंत्रित है, जो कथा के सामाजिक तनाव की पृष्ठभूमि निर्मित करती है। रागणी 11–13 में भावनात्मक तीव्रता के साथ छंद में लयात्मक उतार-चढ़ाव दृष्टिगोचर होता है, जो राँझा की मानसिक द्वंद्वात्मकता और आंतरिक विखंडन को व्यक्त करता है। वहीं रागणी 14–16 में वैराग्य और आध्यात्मिकता के प्रसंगों के साथ छंद पुनः स्थिरता की ओर लौटता है, जिससे एक प्रकार की भावात्मक संतुलन अवस्था निर्मित होती है।

ध्वन्यात्मकता की दृष्टि से भी इन रागणियों में विशेष संरचना दिखाई देती है। करुण और विरहात्मक प्रसंगों में दीर्घ स्वरों तथा मृदु ध्वनियों का प्रयोग अधिक होता है, जो भावों की गहनता को बढ़ाता है, जबकि आक्रोश और सामाजिक तनाव वाले प्रसंगों में कठोर व्यंजन ध्वनियाँ अधिक प्रभावशाली होती हैं। इस प्रकार, ध्वनि और भाव के बीच एक सुसंगत संबंध स्थापित होता है।

पिंगल शास्त्र के सिद्धांतों के आलोक में यह भी स्पष्ट होता है कि रागणी की छंदात्मक संरचना केवल तकनीकी अनुशासन नहीं, बल्कि भाव-अभिव्यक्ति का सक्रिय माध्यम है। मात्रा, यति, तुक और ध्वनि मिलकर एक ऐसी काव्यात्मक संरचना का निर्माण करते हैं, जो न केवल श्रव्य रूप से आकर्षक है, बल्कि कथात्मक प्रवाह और भावात्मक तीव्रता को भी सशक्त बनाती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि रागणी 8–16 में पिंगल शास्त्र के सिद्धांतों का सुसंगत और सृजनात्मक प्रयोग

हुआ है, जो इस लोक-विधा को एक परिपक्व और संरचित काव्य-परंपरा के रूप में स्थापित करता है।

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन यह संकेत करता है कि रागणी 8–16 केवल कथा का विस्तार नहीं, बल्कि एक गहन सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श का प्रतिनिधित्व करती हैं। यहाँ प्रेम व्यक्तिगत अनुभव की सीमा से बाहर निकलकर सामाजिक संरचना से टकराता है और संघर्ष का रूप ग्रहण करता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था, 'इज्जत' की अवधारणा और सामुदायिक नियंत्रण जैसे तत्व इन रागणियों में स्पष्ट रूप से उभरते हैं, जहाँ नारी की स्वतंत्रता सीमित कर दी जाती है। हीर का चरित्र इस संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह व्यक्तिगत प्रेम और सामाजिक बंधनों के बीच निरंतर संघर्ष का प्रतीक बनकर उभरती है।

राँझा का जोगी बनना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि जब सामाजिक व्यवस्था प्रेम को स्वीकार नहीं करती, तो व्यक्ति आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख हो जाता है। यह रूपांतरण भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में गहराई से निहित है, जहाँ विरह और वैराग्य को आध्यात्मिक उत्कर्ष का माध्यम माना गया है।

इसके अतिरिक्त, रागणी परंपरा को व्यापक लोक-साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में देखने पर यह स्पष्ट होता है कि यह केवल क्षेत्रीय अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सार्वभौमिक मानवीय अनुभवों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। रागणी 8–16 न केवल कथात्मक विकास को दर्शाती हैं, बल्कि वे सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्य-व्यवस्था और मानवीय संवेदनाओं के अंतर्संबंधों को भी उजागर करती हैं, जो इसे व्यापक साहित्यिक विमर्श का विषय बनाती हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रागणी 8–16 के माध्यम से हीर–राँझा की कथा एक जटिल सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया के रूप में विकसित होती है। इस चरण में प्रेम का स्वरूप महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजरता है, जहाँ प्रारंभिक आकर्षण सामाजिक संघर्ष में परिवर्तित होकर अंततः गहन विरह और वैराग्य में परिणत होता है। राँझा का जोगी बनना केवल व्यक्तिगत निर्णय नहीं, बल्कि सामाजिक अस्वीकृति के विरुद्ध एक प्रतीकात्मक प्रतिक्रिया है, जो प्रेम को आध्यात्मिक स्तर पर स्थापित करता है। दूसरी ओर, हीर का चरित्र नारी की उस स्थिति को उजागर करता है जहाँ प्रेम और सामाजिक मर्यादा के बीच संघर्ष उसे गहन पीड़ा की ओर ले जाता है। पिंगल शास्त्र के आधार पर किया गया छंद विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि रागणियाँ केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित काव्य-शिल्प का उदाहरण हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि हरियाणवी रागणी परंपरा भारतीय लोक-साहित्य की एक महत्वपूर्ण धरोहर है, जो सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक आलोचना और मानवीय अनुभवों का प्रभावी माध्यम है।

इस प्रकार, हरियाणवी रागणी परंपरा भारतीय लोक-साहित्य में एक सशक्त और संरचित काव्य-परंपरा के रूप में स्थापित होती है, जो क्षेत्रीय अनुभवों को सार्वभौमिक मानवीय संवेदनाओं से जोड़ती है।

संदर्भ सूची

1. अशोधिया, ए. के. (2026). हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा: पिंगल शास्त्र के आलोक में एक सांस्कृतिक विश्लेषण (रागणी 1–7 के संदर्भ में). *The Academic, 4*(3), 2261–2265. https://doi.org/10.5281/zenodo.19542794
2. अशोधिया, ए. के. (2025). हीर राँझा रागणी संग्रह. Sjain Publication.
3. द्विवेदी, हज़ारी प्रसाद. (1998). हिन्दी साहित्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन.

4. शर्मा, रामविलास. (2000). लोक साहित्य की भूमिका. वाणी प्रकाशन.
5. सिंह, नगेन्द्र. (2002). साहित्य और समाज. राजकमल प्रकाशन.
6. त्रिपाठी, रामनाथ. (2010). पिंगल शास्त्र और छंद विधान. लोकभारती प्रकाशन.
7. यादव, सुरेन्द्र. (2015). हरियाणवी लोक साहित्य और संस्कृति. हरियाणा साहित्य अकादमी.
8. Hall, S. (1997). Representation: Cultural representations and signifying practices. Sage Publications.
9. Ramanujan, A. K. (1991). Folktales from India. Pantheon Books.
10. Vatsyayan, K. (1980). Traditional Indian theatre: Multiple streams. National Book Trust.
11. Zipes, J. (2012). The irresistible fairy tale: The cultural and social history of a genre. Princeton University Press.